Quadrant II – Notes

Programme: T.Y.B.A

Subject: HINDI

Paper Code: HND 102

Paper Title: अस्मितामूलक विमर्श

Unit: 02

Module Name: मैत्रेयी पुष्पा

Module No: 11

Name of the Presenter: Miss. Radhika Naik

Notes

बीसवीं सदी के अंतिम दशक की महत्वपूर्ण रचनकर मैत्रेयी पुष्पा ने हिन्दी साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। बीसवीं सदी महिला जागरण की सदी है। इस काल में महिलाओं ने संघटित होकर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ी। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी के विभिन्न रूप उभरकर सामने आए हैं।

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म सिकुरी गाँव के ब्राहमण परिवार में ३० नवंबर १९४४ को हुआ। ब्राहमण होते हुये भी खेती इस परिवार का मुख्य व्यवसाय था। मैत्रेयी पुष्पा के पिता का नाम हीरलाल और माँ का नाम कस्तुरी था। मैत्रेयी पुष्पा की माँ बहुत साहसी महिला थी। जब मैत्रेयी अठारह महीने की थी तभी उनके पिता की मृत्यु हुयी जिसके बाद इनकी माँ ने ही इनकी परवरिश की। इनकी माँ कर्मठ और इरादों की मजबूत महिला थी जिनका प्रभाव मैत्रेयी पुष्पा पर पड़ा। मैत्रेयी पुष्पा की माँ उनकी प्रेरणास्रोत हैं। इनकी माँ ने ही उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। उस समय में स्त्रियों को अनेक अन्याय एवं अत्याचार से गुजरना पड़ता था, इस संघर्षमय परिस्थिति में स्त्री समस्या को वाणी देने का प्रयास मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी रचनाओं में किया है।

मैत्रेयी पुष्पा का रचना साहित्य कुछ इस प्रकार है- इनके कहानी संग्रह जैसे- चिहनार, ललमियाँ, गोमा हँसती है, पियारी का सपना, तुम किसकी हो बिन्नी?, पगला गयी है भगवती, बोझ, सिस्टर, आदि।

इनके उपन्यास जैसे- चाक, आल्मा कबूतरी, इदन्नमम, बेतवा बहती रही, झुलानट, विजन, अगनपाखी, आदि।

आत्मकथा जैसे- कस्तुरी कुंडल बसे, गुड़िया भीतर गुड़िया, आदि।

जिसके अतिरिक्त इन्होंने निबंध संग्रह, कविता संग्रह एवं नाटक भी रचे हैं।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य द्वारा स्त्री के अनेक रूप को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में निजी, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझते नारी के विविध रूप उभरकर सामने आए हैं।

- **मैत्रेयी पुष्पा की नारी साहसी है**

लेखिका अपने साहित्य में बहुत बारीकी से स्त्री विमर्श के एक एक पहलू को प्रस्तुत करती है। जिस प्रसंग को परंपरागत समाज पर्दे में छिपाकर रखता है, उस प्रसंग को मैत्रेयी जी वास्तविक ढंग से प्रस्तुत करने में नहीं हिचकिचाती। जिसका उदाहरण इनकी आत्मकथा कस्तुरी कुंडल बसे में मैत्रेयी जी ने अपने वैवाहिक जीवन का संदर्भ दिया है इसमे देखने मिलता है। बात मैत्रेयी जी के सुहागरात की है जहां विवाह के बाद अपने अपने पति के साथ मिलन के लिए आतुर नवविवाहित मैत्रेयी जब पति को संकोच तथा भय से पसीना पसीना होते देखती है तो वह स्वयं ही पहल करके उनके साथ प्रेम संबंध बनाने का प्रयास करती है। पर उसका यह बर्ताव उसे अपने पति के नजरों में गिरा देता है। पुरुष की कल्पना में अपनी नवविवाहित पत्नी का रूप संकोचशील, डरी-सहमी, नजरे झुकाए, एक कोने में खड़ी इस प्रकार का होता है जिसका मैत्रेयी ने आपण खुलेपन के व्यवहार से तोड़ने का साहस किया तो उसके पति का पौरुष्य तिलमिला उठा

- **आत्मनिर्भर नारी की रचना**

यह देखा जाता है कि परिवार और समाज द्वारा स्त्रियों की इच्छाओं और आकांक्षाओं का दमन निरंतर किया जाता है।

उदा.-'झूला नट' की नायिका शीलो

शीलो हमेशा अपनी इच्छाओं मनोंभावों का अनुसरण करती है और उसने कभी अपनी मन की किसी भी भावना को कुचला नहीं हैं। पति सुमेर द्वारा त्याग करने पर भी अपना जीवन समाप्त करने का विचार उसके मन में नहीं आया। वह जिंदगी को सकारात्मक ढंग से जीने में विश्वास रखती है। भारतीय समाज में नारी केवल उनके संबंदों से पहचानी जाती है जैसे किसी की माँ तो किसी बेटी या किसी की पत्नी बस इन्हीं रूप में नारी को पहचाना जाता है उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व होना कोई महत्व नहीं रखते ऐसे समाज में मैत्रेयी पुष्पा ने शीलो के चरित्र द्वारा स्त्री का एक स्वतंत्र व्याकटित निर्माण करने का

प्रयास किया है। शीलो के साहस एवं आत्मविश्वास के साथ यह समझने का प्रयास किया है कि स्त्री और पुरुष दोनों को एक दूसरे कि आवश्यकता होनी चाहिए। केवल स्त्री ही रिश्ते निभाए रिश्तों कि अहमियत को समझे यह संभव नहीं।

- **विद्रोही नारी**

मैत्रेयी पुष्पा की नारी, सहनशील एवं संघर्षशील है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में नारी के अलग अलग रूप को प्रस्तुत कर भारतीय समाज में नारी के जिस पारंपरिक रूप की अवधारणा बनी हुयी है उससे अत्यंत अलग स्त्री का निर्माण अपने साहित्य में किया है। जो परम्पराएँ नारी पर अन्याय एवं अत्याचार करती है उसके विरोध में स्त्री पात्र संघर्ष करती दिख रही है। इन्होंने नारी के बदलटी मानसिकता को दिखाया है। मैत्रेयी पुष्पा चाहती है कि नारी में जितनी ममता, करुणा और सहनशीलता होती है अवसर आने पर कठिन स्थितियों से जूझने के लिए वह उतनी ही कठोर और विद्रोही भी बन सकती है।

- **स्वतंत्र व्यक्तित्व का निर्माण**

नारी स्वतंत्रता एवं नारी जागरण पर मैत्रेयी पुष्पा ने विशेष ध्यान दिया है।

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में नारी स्वतंत्रता एवं नारी जागरण की स्थिति को चित्रित किया है। आज की नारी अपने व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। मैत्रेयी पुष्पा के चाहे उपन्यास हो या कहानी ही या निबंध इन्होंने अपने साहित्य में सदियों से सताई गयी स्त्री के दर्द का बयान एवं उनमे विद्रोह तत्वों की खोज करना ही अपना महत्वपूर्ण मकसद समझा। इदन्नमम उपन्यास की नायिका केवल मन्दाकिनी केवल निजी स्तर पर ही संघर्ष नहीं करती बल्कि मजदूरों के हक़ के लिए भी लड़ती है मैत्रयी पुष्पा ने साहसी, निडर, बेखौफ, स्वाभिमानी, अन्याय का प्रतिकर करनेवाली दृढ़ एवं निश्चयी महिला का निर्माण किया है जो किसी भी हालत में पुरुष सत्ता के सामने झुकना स्वीकार नहीं करती।

- **मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री शोषण**

स्त्री पर हो रहे शारीरिक शोषण एवं मानसिक शोषण का भी जिक्र मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में किया है जैसे- पति का पत्नी पर संदेह, पति के अन्य स्त्रियों से संबंध, विधवा स्त्री, अशिक्षा, आदि।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्रियाँ हमेशा से स्वयं सिद्ध नायिकाएँ रही हैं, वह चाहे मन्दाकिनी हो, सारंग, शीलो या फिर अल्मा या अन्य कोई... वैसी स्त्रियाँ अपने बल पर अपना जीवन चुननेवाली, रचनेवाली अपने दम पर समाज की दशा दिशा को मोड़ने का दम रखनेवाली सबल स्त्रियाँ हैं।